स्वास्थ्य प्रबंधनः

बकरी के व्यावसाय में बकरियों को स्वस्थ्य रहना बहुत जरूरी है जिससे वे पूरा वजन देती है और अधिक लाभ प्राप्त होता है। गाभिन बकरियों का देखभाल बहुत जरूरी है, इसका असर गर्भ में पल रहे बच्चे पर पड़ता है। गाभिन बकरी को तीन महिने बाद अलग कर देना चाहिए और इस अवस्था में इसको मारने–पीटने, कसकर बांधना, दौड़ाना, तंग करना इत्यादि से परहेज करना चाहिए।

बकरियों में संतुलित आहार और उचित देखभाल करके बीमारियों को कम किया जा सकता है। बकरियों को स्वस्थ्य रखने के लिए निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिएः –

– बाड़े में जरूरत से ज्यादा बकरी नहीं रखें,
– मेमनों और गाभिन बकरियों को अलग रखें,
– बकरियों को साफ एवं ताजा पानी दें,
– बाड़े को साफ–सुथरा रखें,
– नियमित रूप से टीकाकरण कराएं,
– नियमित रूप से परजीवीनाशक दवा पिलाएं।

टीकाकरणः

क्र.सं0	रोग का नाम	टीका का नाम	टीका लगाने की विधि एवं मात्रा	टिप्पणी
1.	मुँहपका एवं खुरपका (एफ.एम.डी.)	एफ.एम.डी. वैक्सीन	1–2 ml चमड़ा में	प्रतिवर्ष नवम्बर–दिसम्बर में
2.	गलघोटू (एच. एस.)	एच. एस. वैक्सीन	2 ml मांस में	प्रतिवर्ष मई–जून में
3.	जहरबाद (बी. क्यू.)	बी. क्यू.	2 ml मांस में	प्रतिवर्ष मई–जून में
4.	फड़किया (एन्टेरोटॉक्सीमिया)	एन्टेरोटॉक्सीमिया वैक्सीन	2–5 ml चमड़ा में	प्रतिवर्ष मई–जून में
5.	PPR (पी. पी. आर.)	पी. पी. आर. वैक्सीन	1–2 ml चमड़ा में	प्रतिवर्ष मई–जून में

सारांशः

– अधिक धूप से बचाने के लिए छाया का प्रबंध करें,
– सर्दी से बचाने के लिए अगीठी का व्यवस्था करें,
– दाना मिश्रण खिलाने के बर्तनों की सफाई प्रतिदिन करें,
– बकरी घर की सफाई रोज करें,
– नवजात मेमनों, गाभिन बकरी एवं प्रसव के बाद मादा बकरी के रख–रखाव पर अधिक ध्यान दें,
– बकरियों को नियमित रूप से टीकाकरण करें,
– बकरी के बीमार होने पर तुरंत उसे अलग कर दें,
– नवजात मेमनों को माँ का पहला दूध जन्म के आधे घंटे के अंदर पिलावें।
– नर बच्चों का बंध्याकरण 2–3 माह के उम्र में करवाएं।

धन्यवाद!

बकरी पालन

डा0 अनील कुमार रवि
विशेषज्ञ (पशु पालन)
डा0 सुरेन्द्र चौरसिया
(कार्यक्रम समन्वयक)
कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर

BIHAR AGRICULTURAL UNIVERSITY SABOUR
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर

भाकृअनुप
ICAR

बकरी जिसे गरीबों का ए.टी.एम. कहा गया है, एक बहुत ही सहनशील और ढीठ जानवर है जो कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी ढल जाती है। बकरी विभिन्न प्रकार की प्रजातियों के पौधों की पत्तियों को खाती है और किसी भी अन्य पशुधन की तुलना में जंगल–झाड़ी में चर कर पेट भर लेती है। इसके चरने के विशेष आदत के कारण यह सुखाड़ में भी गुजारा कर लेती है। यही कारण है कि अनउपजाऊ, बंजर और परती भूमि जहाँ कृषि नहीं हो सकता वहाँ बकरीपालन आसानी से किया जा सकता है।

बकरी पालन अन्य कृषि और दुग्ध उत्पादन वाले व्यावसाय की तुलना में कम लागत, सहज तकनीक, कम खर्च तथा कम जोखिम वाला व्यावसाय है। इसके साथ–साथ बकरियों का बीमा कराकर जोखिम को और कम किया जा सकता है।

इस व्यावसाय को 5–10 बकरियों के साथ शुरू किया जा सकता है और एक से डेढ़ साल में आमदनी आने लगती है। इसलिए यह व्यावसाय कम जमीन तथा भूमिहीन श्रमिकों के लिए एक अच्छा है। इस को महिला भी बहुत अच्छी तरह से संभाल सकती है और वे अपने घर के आमदनी को बढ़ा सकती है।

नस्लः

पूरे भारत में विभिन्न प्रकार के बकरियाँ पायी जाती है। जिसमें बिहार के लिए ब्लैक बंगाल, बरबरी, बीटल, सिरोही तथा जमुनापरी उपयुक्त है। ब्लैक बंगाल छोटे स्तर के बकरी–पालक मुख्य रूप से भूमिहीन मजदूर के लिए बहुत ही अच्छा है। यह 15 महिने में बच्चे को जन्म देने लायक हो जाती है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है कि ये दो साल में 3 बार बच्चा दे देती है और एक बार में 2–3 बच्चा देती है। इस बकरी में दूध न के बराबर होता है और अधिक बच्चा होने के कारण दूध की कमी से बच्चे में मृत्यु दर अधिक होती है।

इस बकरियों का मांस सबसे स्वादिष्ट होता है तथा चमड़ा भी उच्च कोटि की होती है। यह मुख्यतः बिहार बंगाल ओर पड़ोसी राज्य में पायी जाती है।

बरबरी, बीटल, सिरोही तथा जमुनापरी मांस उत्पादन के लिए बेहद ही अच्छी नस्ल है। इनके शरीर का बढ़ोतरी बहुत तेजी से होता है और ये सभी 6–9 महिनों में बाजार में बिकने के लिए तैयार हो जाती है। ये 1–2 बच्चे एक बार में देती है। ये सभी प्रजाती 0.5 से 0.75 ली0 दूध दे सकती है। इसमें जमुनापरी सबसे अधिक दूध देती है तथा इसे गरीबों का गाय भी कहा जाता है।

आवास प्रबंधनः

बकरी पालन के लिए काफी कम जमीन की आवश्यकता होती है ओर लगभग हर इलाकों में इसको पाला जा सकता है।

स्थानः

बकरी का घर जल जमाव से दूर ऊँची जगह पर होना चाहिए जहाँ पानी न लग सके। जमीन अगर बलुआही हो तो बहुत ही अच्छा जिससे कीचड़ होने का डर नहीं रहता है। जिससे आसपास सफाई आसानी से किया जा सकता है।

बकरीघरः

बकरी 10–12 वर्गफीट तथा बकरा के लिए 15–20 वर्गफीट जगह की आवश्यकता पड़ती है। आमतौर पर बाड़े की चौड़ाई 15–20 फीट तथा उँचाई लगभग 10–12 फीट होती है ओर इसकी लम्बाई बकरी के संख्या के अनुसार घटाई–बढ़ाई जा सकती है। बाड़े के लगभग दुगुना आकार आगे खाली स्थान होनी चाहिए जिसमें बकरी आसानी से घूम–फिर सके ओर इस स्थान को तार से घेर दें जिससे कुत्तों तथा अन्य जानवर से बचाया जा सके।

बाड़े का निर्माण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि बाड़े उत्तर–दक्षिण दिशा में हो। बाड़े में बकरा, गाभिन तथा बीमार पशु के लिए अलग जगह होनी चाहिए।

बाड़े का फर्श सीमेंट या बलुआही मिट्टी का होना चाहिए।

आहार प्रबंधनः

बकरी आमतौर पर चर कर अपना पेट भरती है। 5–10 बकरी रखने वाले पशुपालक खासकर ब्लैक बंगाल प्रजाती को चरा कर पाला जा सकता है। लेकिन इससे इनका वजन ज्यादा नहीं हो पाता, अगर वे चराने के साथ–साथ कुछ दाना भी खिलाएं तो उनमें वृद्धि अधिक होती है।

बड़े स्तर पर तथा अच्छे नस्ल के बकरी को बाड़े में रख कर खिलाना उचित होता है। इन्हें बाड़े में ही हरी घास तथा दाना दिया जाता है और इस विधि से बकरियों का वजन अधिक बढ़ता है। इसे व्यावसाय के रूप में अपना कर अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है।

बकरियों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए हरा एवं सूखा चारा के साथ–साथ दाने का मिश्रण भी देना आवश्यक है। जैसे–मकई, जौ, खल्ली, चना, चोकर, नमक और खनिज लवण मिश्रण आदि।

आहार की मात्रा बकरी के उम्र और स्थिति पर निर्भर करता है। सफल बकरी पालन के लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि किस उम्र में कितना और कौन–सा चारा दें। मेमने, दूधारू तथा गाभिन बकरियों को अलग से चारा देना चाहिए। अनुकूल वृद्धि के लिए अलग–अलग खाना देना आवश्यक है।

शरीर कर भार (कि0ग्रा0)		खाने की मात्रा (ग्राम)
4	–	50
5	–	100
6	–	150
7	–	200
8	–	250
9–20	–	350
25	–	400